कक्षा : ग्यारहवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) पक्ष का प्रकार नहीं है-
(क) अनेक (ख) अवक्तव्य
(ग) असत् (घ) गुण (घ)

(ii) सप्तभंगी का तृतीय भेद है-
(क) स्याद् अवक्तव्य (ख) स्याद् अस्ति नास्ति
(ग) स्याद् नास्ति (घ) स्याद् अस्ति अवक्तव्य (ख)

(iii) एक सूची अंगुल क्षेत्र के अन्दर श्रेणियाँ है-
(क) अनन्त (ख) असंख्यात
(ग) अनन्तानन्त (घ) संख्यात (ख)

(iv) गणितानुयोग से सम्बन्धित आगम नहीं है-
(क) भगवती (ख) सूर्य प्रज्ञप्ति
(ग) चन्द्र प्रज्ञप्ति (घ) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (क)

(v) कार्य के भेद हैं-
(क) 6 (ख) 5
(ग) अनेक (घ) 18 (ख)

(vi) काल द्रव्य का गुण है-
(क) अवगाहन (ख) उपयोग
(ग) वर्तन (घ) चलन (ग)

(vii) भगवान अजितनाथ की साध्वी संख्या है-
(क) 3 लाख (ख) 3 लाख 30 हजार
(ग) 3 लाख 3 हजार (घ) 3 लाख 36 हजार (ख)

(viii) श्री नमिनाथ स्वामी की प्रथम आर्या का नाम है-
(क) अमिला (ख) जखिणी
(ग) पुष्पवती (घ) अंजुया (क)

(ix) ईर्यापथिक बंध नहीं होता है-
(क) 11 वें गुणस्थान में (ख) 12 वें गुणस्थान में
(ग) 13 वें गुणस्थान में (घ) 14 वें गुणस्थान में (घ)

(x) ईर्यावही बंध का थोकड़ा चलता है-
(क) भगवती के 8वें शतक में (ख) प्रज्ञापना में
(ग) भगवती के 12वें शतक में (घ) नन्दी सूत्र में (क)

(xi) केवली समुद्घात में छठे समय में आत्म-प्रदेशों को करता है-
(क) कपाट आकार (ख) मंथान आकार
(ग) दण्डाकार (घ) लोकस्थ (क)

(xii) तीर्थंकर भगवान केवली समुद्घात करते हैं, इसका उल्लेख है-
(क) लोक प्रकाश में (ख) प्रवचन सारोद्धार
(ग) आवश्यक निर्युक्ति (घ) नन्दी सूत्र (ग)

(xiii) इनमें से चरम नहीं है-
(क) अलेशी (ख) केवलज्ञानी
(ग) अयोगी (घ) मनःपर्यवज्ञानी (घ)

(xiv) विनयवादी के भेद हैं-
(क) 84 (ख) 180
(ग) 67 (घ) 32 (घ)

(xv) समवशरण के थोकड़े में अनुत्तर विमान में 47 में से बोल पाते हैं-
(क) 33 (ख) 27
(ग) 26 (घ) 40 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) ज्ञान-दर्शन आधेय हैं और जीव आधार है। (हाँ)

(ii) छः काय के जीवों की रक्षा करना परात्मा है। (हाँ)

(iii) जगत के घट-पटादि पदार्थ ज्ञान है। (नहीं)

(iv) सूत्रागम गणधरों के लिए अनन्तरागम है। (नहीं)

(v) कपड़े में कसौटी का गुण है। (नहीं)

(vi) कारण को प्रकट करने वाला कार्य है। (नहीं)

(vii) श्री वासुपूज्य स्वामी का राज्यकाल 42 लाख वर्ष का है। (नहीं)

(viii) बाजपक्षी श्री विमलनाथ स्वामी का लांछन है। (नहीं)

(ix) ईर्यापथिक में सादि सपर्यवसित भंग ही पाया जाता है। (हाँ)

(x) चौदहवें गुणस्थान वाला 8 समय में मोक्ष जाता ही है। (नहीं)

(xi) केवली समुद्घात में मन योग नहीं होता है। (हाँ)

(xii) जम्बूद्वीप सभी द्वीप-समुद्रों से छोटा है। (हाँ)

(xiii) क्रियावादी नारकी, मनुष्य का आयुष्य बांधते हैं। (हाँ)

(xiv) शुक्ल लेश्या में क्रियावादी समवशरण ही पाया जाता है। (नहीं)

(xv) विभंगज्ञान में विनयवादी समवशरण ही पाया जाता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	निगम	(क) सेसवं	जनपद
(ii)	अधर्मास्तिकाय	(ख)चक्राभ	स्थिर गुण
(iii)	अनुमान प्रमाण	(ग) अभिमुख करना	सेसवं
(iv)	अपवाद	(घ) शरीरस्थ	आलम्बन
(v)	ध्यान	(च) जनपद	रूपस्थ
(vi)	व्यय	(छ) मिश्रदृष्टि	विनाश होना
(vii)	मन्दर	(ज) विनाश होना	चक्राभ
(viii)	स्वस्तिक	(झ) श्रुतज्ञान	चन्द्र
(ix)	भाववेद	(य) आलम्बन मार्ग	विकार भावना
(x)	आठवाँ भंग	(र) स्थिर गुण	अभव्य
(xi)	आवर्जीकरण	(ल) रूपस्थ	अभिमुख करना
(xii)	केवली समुद्घात का आठवाँ समय	(व) वनस्पतिकाय	शरीरस्थ
(xiii)	अक्रियावादी, अज्ञानवादी	(क्ष) अभव्य	वनस्पतिकाय
(xiv)	विनयवादी, अज्ञानवादी	(त्र)विकार भावना	मिश्रदृष्टि
(xv)	क्रियावादी	(ज्ञ) चन्द्र	श्रुतज्ञान

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मैं संकल्प मात्र को ग्रहण करने वाला नय हूँ। नैगम

(ii) मैं अनुरूप आकृति में की जाने वाली स्थापना हूँ। तदाकार

(iii) मैं कार्य की सिद्धि में मूल कारण हूँ। उपादान

(iv) धुँए को देखकर अग्नि को जानना मेरा भेद है। आसवेणं

(v) मुझमें रूप रहित निरंजन, निर्मल, सिद्ध भगवान का ध्यान किया जाता है। रूपातीत

(vi) मुझमें क्रिया, कल्प, आचार, व्यवहार आदि की व्याख्या की जाती है। चरणकरणानुयोग

(vii) मैं श्री अरनाथ स्वामी जी की माता हूँ। देवी

(viii) मेरा शासनकाल 4 सागर प्रमाण का है। अनन्तनाथ स्वामी

(ix) मैं सयोगी वीतरागियों को ही बंधता हूँ। ईर्यापथिक बंध

(x) 9 वें गुणस्थान के प्रथम भाग तक ही मेरा उदय रहता है। वेद

(xi) मेरा दूसरा नाम आवश्यक करण भी है। आवर्जीकरण

(xii) मैं एकीभाव पूर्वक प्रबलता से कर्मों का घात करता हूँ। समुद्घात

(xiii) मैं ज्ञान की आवश्यकता नहीं मानता हूँ, मेरे लिए क्रिया ही प्रधान है। क्रियावादी

(xiv) मैं भिन्न-भिन्न मत एवं दर्शनों का बोधक हूँ। समवशरण

(xv) समवशरण के थोकड़े में अचरम उद्देशक में हम तीन बोल नहीं पाते हैं।
अलेशी,अयोगी, केवलज्ञानी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) नाम निक्षेप किसे कहते हैं ?
जाति, द्रव्य, गुण, क्रिया आदि निमित्तों की अपेक्षा किये बिना किसी वस्तु या व्यक्ति की इच्छानुसार नाम रख देना, नाम निक्षेप है।

(ii) भगवान पार्श्वनाथ के साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओं की संख्या लिखिए।
साधु-16 हजार, साध्वी-38 हजार, श्रावक-1 लाख 64 हजार, श्राविकाएँ-3 लाख 39 हजार

(iii) अंतिम चार तीर्थंकरों की दीक्षा पर्याय लिखिए।
नमिनाथ स्वामी- 2500 वर्ष, अरिष्टनेमि स्वामी- 700 वर्ष, पार्श्वनाथ स्वामी-70 वर्ष, महावीर स्वामी-42 वर्ष

(iv) ईर्यापथिक बंध के थोकड़े में बहुत भव आसरी प्रथम भंग कैसे पाया जाता है ?
प्रथम भंग- बांधा था, बांधता है,बांधेगा-उस जीव में पाया जाता है जिसने गत काल (पूर्व भव) में उपशम श्रेणी की थी, उसमें बांधा था, वर्तमान में उपशम श्रेणी में बांधता है और आगामी भव में क्षपक श्रेणी करेगा उसमें बांधेगा।

(v) ईर्यापथिक बंध का पूर्व प्रतिपन्न और प्रतिपद्यमान किसे कहते हैं ?
जिसने पहले ईर्यापथिक कर्म का बन्धन किया हो उसको 'पूर्व प्रतिपन्न' कहते हैं।
जो जीव ईर्यापथिक बंध के प्रथम समय में वर्तमान होते हैं, उनको प्रतिपद्यमान कहते हैं।

(vi) केवली समुद्घात के 8 समयों में कौन-कौनसे योग होते हैं?
पहले समय में- औदारिक काय योग, दूसरे समय में-औदारिक मिश्र काय योग, तीसरे, चौथे, पाँचवें

समय में-कार्मण काय योग, छठे-सातवें समय में- औदारिक मिश्र काय योग, आठवें समय में- औदारिक काय योग होता है।

(vii) केवली समुद्घात कौन करते हैं?

जिन केवली भगवंतों की केवल ज्ञान प्राप्ति के समय आयु 6 माह अथवा उससे कम शेष रहती है, वे नियम से केवली समुद्घात करते हैं। जिनकी आयु केवलज्ञान प्राप्ति के समय 6 माह से अधिक शेष हो, उनमें कोई केवली समुद्घात करते हैं, कोई नहीं करते। जिनके चार अघाती कर्मों की विषमता रहती है अर्थात् आयु कर्म की अपेक्षा वेदनीय, नाम व गोत्र कर्म की स्थिति अधिक होता तो उन्हें बराबर करने के लिए केवली समुद्घात करते हैं।

(viii) मिश्रदृष्टि जीव अज्ञानवादी और विनयवादी ही क्यों होते हैं?

मिश्र दृष्टि साधारण परिणाम वाले होने से, अनिर्णय की स्थिति वाले होने से, उनकी गणना आस्तिक या नास्तिक में नहीं की जाती है, इसलिए वे अज्ञानवादी और विनयवादी होते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) कार्यशुद्ध और कारण अशुद्ध को उदाहरण से समझाइए।

कारण अशुद्ध- जैसे-सुबुद्धि प्रधान ने दुर्गन्ध वाला पानी, खाई से लाकर विशुद्ध बनाया और जितशत्रु राजा को बोध दिया। उसमें अनन्त जीवों की हिंसा हुई, यह कारण अशुद्ध था परन्तु शुद्ध-सुबुद्धि प्रधान का इरादा राजा को प्रतिबोध देने का था, अतः कार्यशुद्ध था।

(ii) द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को जीव के दृष्टान्त से समझाइए।

द्रव्य से-एक जीव है। क्षेत्र से- असंख्यात प्रदेश है। काल से-आदि अन्त रहित और भाव से-ज्ञान, दर्शन से युक्त है।

(iii) गौण और मुख्य किसे कहते हैं? एक उदाहरण से समझाइए।

पदार्थ के अन्दर गुप्त रूप में रहे हुए वर्णादि धर्म को गौण कहते हैं और प्रगट रूप में रहे हुए वर्णादि धर्म को मुख्य कहते हैं।

उदाहरण (कोई एक मान्य)-1. ज्ञान से मोक्ष होता है, इसमें ज्ञान की मुख्यता है और दर्शन-चारित्र-तप आदि क्रिया की गौणता है।

2. पुरुषार्थ से कार्य की सिद्धि होती है, इसमें काल, स्वभाव, नियति, पूर्व कर्म आदि की गौणता है और पुरुषार्थ की मुख्यता है।

3. आचारांग आदि सूत्रों में मुनि के आचार की मुख्यता बताई है, शेष साधनों की गौणता है।

4. भगवती सूत्र में ज्ञान की मुख्यता बतलाई है, शेष आचारादि की गौणता है।

5. मुख्यता में कोयल काली, पोपट (तोता) हरा, सोना पीला, मरमोलिया लाल और हंस सफेद है, गौणता में चार वर्ण, दो गंध, पाँच रस और आठ स्पर्श है।

(iv) 24 तीर्थंकरों के सम्यक्त्व प्राप्त होने के बाद होने वाले भव लिखिए।

ऋषभदेव स्वामी की भव संख्या- 13, शांतिनाथ स्वामी की भव संख्या-12, अरिष्टनेमि स्वामी की भव संख्या-9, पार्श्वनाथ स्वामी की 10, महावीर स्वामी की 27 और शेष तीर्थंकरों की भव संख्या 3 है।

(v) ईर्यापथिक बंध के थोकड़े में एक भव आसरी भंगों में छठा भंग नहीं पाने का कारण लिखिए।

यह भंग उस जीव में पाया जाता है जिसने वर्तमान आयुष्य के पूर्व भाग में उपशम श्रेणी नहीं की, अतः ईर्यापथिक बंध नहीं किया। वर्तमान में वह जीव क्षपक श्रेणी कर रहा है, उस समय बांध रहा है। क्षपक श्रेणी में कम से कम अन्तर्मुहूर्त तक तो बंध करेगा ही, एक समय में कोई जीव मोक्ष में नहीं जा सकता, अतः अगले समयों में उसे ईर्यापथिक बंध करना ही पड़ेगा। अतः भविष्य में नहीं बांधेगा,

यह अवस्था नहीं बनती है। एक भव की अपेक्षा से छठा भंग नहीं मिलता है, अतः उसे शून्य भंग भी कहा जाता है।

(vi) केवली समुद्घात के सातवें समय की प्रक्रिया लिखिए।

सातवें समय में कपाट आकार के आत्म-प्रदेशों का संकोच कर दण्डाकार किया जाता है, उस समय भी बहुत सारे आत्म-प्रदेश शरीर में आते हैं। यहाँ भी शरीर से बाहर के आत्म-प्रदेशों में संकोच की अपेक्षा कार्मण काय योग तथा शरीर में आने की अपेक्षा से औदारिक काय योग, इन दोनों की संयुक्त प्रवृत्ति होने से औदारिक मिश्र काय योग होता है।

(vii) तीन विकलेन्द्रिय में समवशरण, आयु बन्ध एवं भवी-अभवी की विवक्षा कीजिए।

तीन विकलेन्द्रिय में दो समवशरण पाये जाते हैं- अक्रियावादी अैर अज्ञानवादी।

सम्यग्दृष्टि और तीन ज्ञान (दो ज्ञान,एक समुच्चय ज्ञान) में आयुष्य का अबंध होता है। नियमा भवी होते हैं।

(viii) शुक्ल पक्षी मनुष्य में समवशरण, आयु बन्ध एवं भवी-अभवी की विवक्षा कीजिए।

शुक्ल पाक्षिक मनुष्य में चारों समवसरण मिलते हैं, क्रियावादी समवसरण वाले वैमानिक देव का आयुष्य बांधते हैं, शेष तीन समवसरण वाले चारों गति का आयुष्य बांधते हैं। नियम से भवी होते हैं।